हृदय में बैठे भगवान् श्रीकृष्ण सुहृद की भाँति कार्य करते हैं और अपनी कथा नित्य सुनने वाले भक्त को शुद्ध कर देते हैं। इस प्रकार भक्त का सुप्त ज्ञान अपने शुद्ध रूप में फिर से उद्भासित हो जाता है। श्रीमद्भागवत और भक्तों से कृष्णकथा को वह जितना अधिक सुनता है, उतनी ही भगवद्भक्ति में निष्ठा हो जाती है। भक्ति की प्रगाढ़ता होने पर रजोगुण एवं तमोगुण से मुक्ति होती है और इस प्रकार काम, लोलुपता आदि का क्षय हो जाता है। इन अशुद्धियों के दूर होने पर भक्त शुद्ध सत्त्व में स्थिर रहता है। फिर भक्तियोग से उत्पन्न आह्लाद के फलस्वरूप उसे भगवत्-तत्त्व का पूर्ण बोध हो जाता है। इस प्रकार विषयैषणा की तीक्ष्ण ग्रन्थी का भेदन कर भक्तियोग उसे तत्क्षण परतत्त्व भगवान् श्रीकृष्ण के ज्ञान में **(असंशयं समग्रम्)** आरूढ़ कर देता है। (भागवत १.२.१७-२१)

अतः श्रीकृष्ण से या कृष्णभावनाभावित भक्तों के मुख से श्रवण करने पर ही कृष्णतत्त्व जाना जा सकता है।

ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ।।२।।

ज्ञानम्=तत्त्वज्ञान; **ते**=तेरे लिए; **अहम्**=मैं; **स विज्ञानम्**=विशेष ज्ञान सहित; **इदम्**=यह; **वक्ष्यामि**=कहूँगा; **अशेषतः**=पूर्णरूप से; **यत्**=जिसे; **ज्ञात्वा**=जानने पर; **न**=नहीं; **इह**=इस संसार में; **भूयः**=फिर; **अन्यत्**=अन्य कुछ भी; **ज्ञातव्यम्**=जानने योग्य; **अवशिष्यते**=शेष रहता है।

अनुवाद

अब मैं तेरे लिए विज्ञानसहित उस ज्ञान को सम्पूर्णता से कहूँगा, जिसको जानकर संसार में फिर कुछ भी जानने योग्य शेष नहीं रहता।।२।।

तात्पर्य

पूर्णज्ञान में इन्द्रियगोचर जगत् तथा उसमें शक्ति का संचार करने वाले आत्मतत्त्व के ज्ञान का समावेश रहता है। इन दोनों का मूल दिव्य ज्ञान हैं। भगवान् श्रीकृष्ण इस ज्ञान का वर्णन करना चाहते हैं, क्योंकि अर्जुन उनका अन्तरंग भक्त एवं सखा है। चौथे अध्याय के आदि में श्रीकृष्ण ने यह भाव अभिव्यक्त किया है कि शिष्यपरम्परा के भगवद्भक्त को ही साक्षात् श्रीभगवान् से पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हो सकती है। वही यहाँ भी कहते हैं। अतः बुद्धिमान् मनुष्य वही है, जो समग्र ज्ञान के उद्गम, सब कारणों के परम कारण और सम्पूर्ण योगमार्गों के एकमात्र ध्येय तत्त्व को जान ले। सब कारणों के परम कारण श्रीभगवान् का तत्त्वज्ञान हो जाने पर सब कुछ ज्ञात हो जाता है, कुछ भी जानने योग्य शेष नहीं रहता। वेदवाणी है: **यस्मिन् विज्ञते सर्वमेव विज्ञातं भवति।**

मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये ।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ।।३।।

भक्ति मार्ग सुगम नहीं है।